ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-9* December-2021
Anthology : The Research

महाकाव्यों में गणेश
Ganesha in the Epics

Paper Submission: 12/12/2021, Date of Acceptance: 23/12/2021, Date of Publication: 24/12/2021

सुनील
पूर्व शोध छात्र,
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

'गणेश' का नाम स्मरण करते ही एक रूप उभरता है, जिसका संपूर्ण शरीर मानव का परंतु मस्तक हाथी का है; जिसकी तुंड वक्र, एक दाँत और कान सूप के समान लंबे-लंबे हैं; जिसका वक्ष स्थूल, उदर विशाल और जाँघ, पिण्डली एवं उरु घने हैं; जिसके वस्त्र लाल तथा कंचुक पीला है; जो किरीट-मुकुट, रत्नजटित बाजूबंद, मरकतमणि जटित अँगूठी आदि सभी आभूषणों से विभूषित हैं; जिसके मस्तक पर अर्धचंद्र और वक्षःस्थल पर नागरूपी यज्ञोपवीत सुशोभित हैं; जिसके चरणों में नूपुर रुनझुन बज रहे हैं; जिसकी एक भुजा में शत्रु संहारक परशु एवं दूसरी भुजा में लड्डुओं से भरा हुआ पात्र है; जिसकी शेष दो भुजाएँ वरद और अभय मुद्रा से युक्त हैं; जो अपने वाहन मूषक पर सवार हैं और सूर्योदय की प्रभा से युक्त हैं, यह ही हैं 'गणपति', सिद्धि-बुद्धि के स्वामी, विघ्नविनाशक श्री 'गणपति' भगवान। यद्यपि भगवान गणपति "ब्रह्मणस्पति" के रूप में वैदिक साहित्य में प्रतिष्ठित हैं। ऋग्वेद में गणपति के अन्य विशेषणों में "महाहस्ती"[१] और "द्विमाता"[२] विशेषतः उल्लेखनीय हैं किंतु महर्षि वाल्मीकि ने आदि काव्य 'रामायण' में आदि देव श्री गणेश का कहीं उल्लेख नहीं किया है। 'महाभारत' से प्राप्त विवरण के अनुसार इस महान ग्रंथ को लिपिबद्ध करने का दुष्कर कार्य 'गणेश' जी द्वारा ही सम्भव हो सका था।

On remembering the name of 'Ganesh', a form emerges, whose entire body is that of a human but the head of an elephant; Whose trunk is curved, a tooth and ears are as long as a soup; Whose chest is thick, abdomen is large and thighs, knees and legs are dense; Whose clothes are red and kanchuka yellow; Who is adorned with all the ornaments like a kirit-crown, a jeweled armlet, a emerald studded ring etc. Whose head is adorned with a crescent moon and the snake-like sacrifices are adorned on chest; nupur runjhun is playing at whose feet; Whose arm is full of enemy destroyer Parashu and in the other arm is a vessel full of laddoos; Whose remaining two arms are equipped with varada and abhaya mudra; Those who are riding on their vehicle mouse and are equipped with the effulgence of sunrise, this is 'Ganapati', the lord of Siddhi-Buddhi, the destroyer of obstacles, Lord Shri 'Ganapati'. Although Lord Ganapati honoured in Vedic literature as "Brahmanaspati". Among other epithets of Ganapati in Rigveda,"Mahasti"१ and "Dwimata"२ are particularly notable, but Maharishi Valmiki has not mentioned Adi Dev Shri Ganesh anywhere in the Adi Kavya 'Ramayana'. According to the details received from 'Mahabharata', the difficult task of writing this great book was possible only by 'Ganesh' ji.

मुख्य शब्दः गणेश, वक्रतुण्ड, एक दाँत, किरीट-मुकुट, अर्धचंद्र, यज्ञोपवीत, परशु, लड्डुओं से भरा पात्र, वरद, अभय, मूषक, सिद्धि, बुद्धि, विघ्नविनाशक, ब्रह्मणस्पति, महाहस्ती, द्विमाता, वाल्मीकि, रामायण, वेदव्यास, महाभारत, गणपति।

Keywords: Ganesha, Curved Trunk, Ekdanta, Kirit-Mukta, Crescent Moon, Sacred Thread, Bowl of Sweet balls, Varada, Abhaya, Mouse, Siddhi, Buddhi, Vighnavinashan, Brahmanaspati, Mahahasti, Dwimatra, Valmiki, Ramayan, Vedavyas, Mahabharat, Ganapati.

प्रस्तावना

सनातन हिंदू धर्म के उपास्य देवताओं में भगवान श्री गणेश का स्थान सर्वोपरि है। किसी भी सत्कर्मानुष्ठान में, किसी भी उत्कृष्ट से उत्कृष्ट एवं साधारण से साधारण लौकिक कार्य में भगवान गणपति का स्मरण, उनका विधिवत् अर्चन एवं वंदन किया जाता है। भगवान श्री गणेश आदि देव हैं। वैदिक साहित्य में विविध नामों से उनकी प्रतिष्ठा मिलती है। ऋग्वेद[३] में कहा गया है कि भगवान श्री गणेश जिस पर प्रसन्न होते हैं उसे कोई क्षति नहीं पहुँचा सकता, वह जिसकी रक्षा करते हैं उसे कोई दुःख और पाप पीड़ित नहीं कर सकता, शत्रु कहीं भी उसकी हिंसा नहीं कर सकते, मन में कुछ तथा क्रिया में कुछ अन्य करने वाले वंचक भी उसे बाधा नहीं दे पाते। अथर्ववेदीय गणपत्युपनिषद्[४] में गणपति की अपार महिमा का वर्णन किया गया है एवं बताया गया है कि ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और इंद्र सब गणेश ही हैं। हेरम्बोपनिषत्[५] में सदाशिव माता पार्वती से कहते हैं - 'हे पार्वती! न योगबल से, न तपोबल से, किंतु केवल परमतत्व के सार रूप हेरम्ब (गणेश) के अनुकूल होने पर ही शंकर ने प्राचीन काल में त्रिपुरासुर के तीनों नगरों को भस्म कर दिया था।

अध्ययन का उद्देश्य

इस भ्रांत धारणा के निवारण से है जिसमें विद्वानों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया जाता रहा है कि आदि कवि 'वाल्मीकि' ने अपने आदि काव्य 'रामायण' में 'गणपति' का स्तवन किया गया है और महर्षि 'व्यास' विरचित 'महाभारत' में भगवान 'श्री गणेश' की कोई मान्यता नहीं है

विस्तार

महर्षि वाल्मीकि 'आदि कवि' माने जाते हैं और उनकी कृति 'रामायण' आदिकाव्य। कथा प्रसिद्ध है कि जब व्याध के बाण से बिंधे हुए क्रौंच के लिए विलाप करने वाली क्रौंची का करुण शब्द ऋषि ने सुना तो उनके मुँह से अकस्मात निकला[६]

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

'हे निषाद! तुमने काम से मोहित इस क्रौंच पक्षी को मारा है, अतः तुम सदा के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त न करो।
'

महर्षि की करुणामयी वाणी सुनकर स्वयं ब्रह्मा वहाँ पर उपस्थित हुए और उन्हें 'रामचरित' लिखने के लिए कहा। 'रामायण' की रचना इसी प्रेरणा का फल है।

कुछ विद्वानों[७] की मान्यता है कि महर्षि ने 'रामायण'के प्रारंभ में भगवान श्री 'गणेश' का स्तवन किया है । 'महाभारत' संसार-साहित्य का वृहत्तम, उत्कृष्टम एवं प्रभवत्तम महाकाव्य है जिसका धार्मिक, साहित्यिक, दार्शनिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक महत्व अतुलनीय है। अतः इसे भारतीय संस्कृति का 'विश्वकोश' ठीक ही कहा गया है। 'भगवद्गीता', महाभारत के 'भीष्मपर्व' का ही एक अंग है। 'विष्णुसहस्रनाम','अनुगीता', 'भीष्मस्तवराज', 'गजेंद्रमोक्ष' आदि आध्यात्मिक तथा भक्तिपूर्ण ग्रंथ भी 'महाभारत' से ही उद्धृत किए गए हैं। अपने इन्हीं गुणों के कारण महाभारत 'पंचमवेद' के नाम से विख्यात है। अपने इस ग्रंथ के विषय में वेदव्यास जी का यह कथन महत्वपूर्ण है कि 'इस ग्रंथ में जो कुछ है वह अन्यत्र है, परंतु जो कुछ इसमें नहीं है वह अन्यत्र कहीं भी नहीं है।' महाभारत से प्राप्त विवरण के अनुसार इस महान ग्रंथ को लिपिबद्ध करने का दुष्कर कार्य श्री गणेश जी द्वारा ही संभव हो सका था। ब्रह्मा जी के परामर्श पर सत्यवतीनंदन 'व्यास' ने भगवान श्री 'गणेश' का स्मरण किया और स्मरण करते ही विघ्नेश्वर भगवान श्री गणेश वहाँ उपस्थित हो गए। तब व्यास जी ने उनसे निवेदन किया कि हे गणनायक! आप मेरे द्वारा निर्मित इस महाभारत ग्रंथ के लेखक बन जाइए; मैं बोलकर लिखाता जाऊँगा। मैंने मन ही मन इसकी रचना कर ली है।[८] विघ्नराज श्री गणेश ने इस शर्त पर 'महाभारत' का लेखन कार्य स्वीकार किया कि मेरी लेखनी लिखते समय क्षण भर के लिए भी नहीं रुकनी चाहिए। वेदव्यास जी ने भी इस शर्त पर कि आप बिना समझे किसी भी प्रसंग में एक अक्षर नहीं लिखेंगे भगवान श्री गणेश की शर्त को स्वीकार कर लिया और इस प्रकार एक उत्कृष्ट महाकाव्य की रचना संभव हो सकी।[९]

लंबे समय से विद्वानों के एक बड़े वर्ग की मान्यता रही है कि महाभारत में गणेश जी की कोई मान्यता नहीं है और महाभारत में गणेश जी का उल्लेख 'क्षेपक' है।

वी.एस. सुक्थंकर[१०] लिखते हैं -

"The Mahabharata - The Encyclopaedia Brahmanica" As He Called it - Did Not Know Ganesa."

एलिस गेट्टी[११] की मान्यता है -

"The Elephant - Faced God Is Not Referred To In Either Of The Texts Of The Two Hindu Epics - The Mahabharata & The Ramayana."

कृष्ण युवराज का विचार है कि

"The Concept Of Ganesha Was Thus An Interpolation In The Mahabharata."[१२] और "In the Mahabharata Neither The Term Vinayaka Nor Ganesa Occurs In the Original Version (Critical Edition) Of This Epic."[१३] "As Regards The Word Ganesa, This Again Is An Interpolation In Adi Parva As It Is Not Included In The Text of The Critical Edition Of MBH."[१४]

ए. के. नारायण[१५] का लिखते हैं कि

"Ganesha, Is Not Found In The Mahabharata."

महाभारत में 'गणाधिप', 'गणेश्वर', 'गणाध्यक्ष', और 'गणकर्त' आदि नामों का निर्देशन 'शिव' के लिए किया गया है, न कि 'गणेश' के लिए[१६]

कुछ अन्य विद्वानों[१७] का विचार है कि महाभारत के 'आरण्यक पर्व' में 'गणेश' नाम 'शंभु' के लिए प्रयुक्त है। पुनः महाभारत के 'आरण्यकपर्व' में उल्लिखित 'गणपति' एक पवित्र तीर्थ है, यह गणेश जी नहीं हैं[१८]

गणेश द्वारा वेदव्यास जी का आशुलेखक बनने की किंवदंती राजशेखर कृत 'बालभारत' एवं 'प्रचंडपांडव' नामक नाटकों के परिचयात्मक अंकों में मिलती है।[१९] इसमें वाल्मीकि व्यास जी से पूछते हैं कि महाभारत की प्रगति कैसी चल रही है? महर्षि व्यास ने उत्तर दिया कि बहुत ही तपस्याओं के पश्चात वे गणेश को आशुलेखक के रूप में प्राप्त कर पाए हैं[२०] किंतु यह कहानी क्षेमेंद्र की 'बृहत्तमंजरी' से प्राप्त नहीं होती है। अतः विंटरनित्ज[२१] और हॉपकिन्स[२२] की मान्यता है कि यह कहानी नवी शती ईस्वी में ज्ञात थी किंतु यह क्षेमेंद्र के समय तक महाभारत में सम्मिलित नहीं हो सकी थी।

निष्कर्ष

'रामायण' के आद्योपांत अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि आदि देव श्री 'गणेश' का उल्लेख उसमें कहीं नहीं हुआ है। यद्यपि रामायण के 'युद्धकाण्ड'[२३] में बालिकुमार अंगद द्वारा हाथी का दाँत उखाड़ना परशुराम द्वारा गणेश के 'दंत-भंग' का स्मरण अवश्य कराता है।'महाभारत' में गणेश जी के आशुलेखक संबंधी किंवदन्ती को क्षेपक मान लिया जाए और यह भी स्वीकार कर लिया जाए की विवेच्य महाकाव्य में उल्लिखित 'गणेश', 'गणाधिप' आदि नाम 'शंकर' आदि के लिए प्रयुक्त हुए हैं, 'गणेश' के लिए नहीं। फिर

भी एक बात, मूल बात, रह जाती है और वह है महाभारत में उपस्थित वह ८,८०० कूट श्लोक जिनका अर्थ समझना आज भी विद्वानों के लिए कुतूहल का विषय बना हुआ है। इन श्लोकों की रचना व्यास जी ने महाभारत की रचनावधि में उस समय की थी जब वह गणेश जी से वचन ले चुके थे कि आप बिना समझे महाभारत में एक भी अक्षर नहीं लिखेंगे। इन श्लोकों के संबंध में व्यास जी की स्पष्ट मान्यता थी कि इस ग्रंथ में ८,८०० कूट श्लोक ऐसे हैं जिनका अर्थ मैं समझता हूँ, शुकदेव समझते हैं और संजय समझते हैं या नहीं इसमें संदेह है।[२४] ११वीं शती ईस्वी के प्रथम चतुर्थांश में भारत की यात्रा पर आने वाले ख्वारिजमी यात्री अल-बिरूनी[२५] जिसने प्राचीन भारत के अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों का उद्घाटन किया है, ने भी अपनी पुस्तक 'किताब-उल-हिंद' में इस परंपरा का उल्लेख किया है - 'व्यास ने ब्रह्मा से एक ऐसे व्यक्ति की माँग की जो उससे सुनकर 'भारत' लिख सके। ब्रह्मा ने अपने पुत्र विनायक को यह कार्य सौंपा, जिसकी मूर्ति में उसके शरीर पर हाथी की सूंड दिखाई देती है और उसे आदेश दिया कि वह लिखते समय कहीं न रुके। साथ ही, व्यास जी ने भी यह शर्त लगा दी कि वह केवल वही लिखें जिसे वह समझ गए हो। इस प्रकार व्यास जी लिखवाते समय कुछ प्रहेलिकाएँ बोल देते थे, जिनके अनेक निर्वचन किए जा सकते थे। इन पर लेखक को सोचना पड़ता था और इस प्रकार व्यास जी को विश्राम के लिए समय मिल जाता था।[२६]

संक्षेप में, इस ग्रंथ में उपस्थित यह ८,८०० श्लोक या प्रहेलिकाएँ महाभारत में भगवान श्री गणेश की उपस्थिति की घोषणा करते हैं।

संदर्भ सूची

1. *"आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्रामं संगृमाय। महाहस्तीदक्षिणेन"॥ - ऋग्वेद ८. ८१. १*
2. *ऋग्वेद १. ३१. २.*
3. *न तमंहो न दुरितं कुतश्चन नारातयस्तितिरूनं द्वयाविनः।*
   विश्वा इदमस्माद् ध्वरसो वि बाधसे यं सुगोपा ब्रह्मणस्पते॥ - ऋग्वेद, २.२३.५
4. *त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं ॥*
   रूद्रस्त्वं इन्द्रस्त्वं अग्निस्त्वं ॥
   वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ॥
   ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥
   अथर्ववेदीय गणपत्युपनिषद् , ६
5. *हेरम्बतत्वे परमात्मसारे नो वै योगान्नैव तपोबलेन ।*
   नैवायुधप्रभावतो महेशि दग्धं पुरा त्रिपुरं दैवयोगात् ॥
   हेरम्बोपनिषत् , ३
6. *रामायण, बालकाण्ड, द्वितीय सर्ग, श्लोक सं.१५*
7. *द्विवेदी, प्रेमशंकर एवं शर्मा, शिवकुमार. "भारतीय साहित्य एवं कला में गणेश", पृ.सं.२७*
8. *लेखको भारतस्यास्य भव त्वं गणनायक।*
   मयैव प्रोच्यमानस्य मनसा कल्पितस्य च॥
   महाभारत, आदिपर्व, १.७७
9. *श्रुत्वैतत् प्राह विघ्नेशो यदि मे लेखनी क्षणम्।*
   लिखतो नावतिष्ठेत तदा स्यां लेखको ह्यहम्॥ -पूर्वोक्त, १. ७८
10. *Sukthankar, V.S. "Mahabharata, Critical Edition", Vol.1, Part.2, P. 884*
11. *Getty. Alice, "Ganesa, A Monograph On The Elephant - Faced God". P. 03*
12. *Krishan, Yuvraj. "Ganesa - Unravelling An Enigma", P. 30*
13. *पूर्वोक्त, पृ. सं. २९*
14. *पूर्वोक्त, पृ. सं. २९*
15. *Narain, A.K. "Ganesa : The Idea And The Icon" P. 22*
16. *Rocher Ludo. "Ganesa, Rise To Prominence". In Brown, Robert L, Ed., 'Ganesa Studies Of An Asian God', P. 71*
17. *Krishan, Yuvraj. "Ganesa - Unravelling An Enigma", P. 30*
18. *पूर्वोक्त, पृ.सं. ३०*
19. *Rocher Ludo. "Ganesa, Rise To Prominence". In Brown, Robert L, Ed., 'Ganesa Studies Of An Asian God', P. 71*
20. *Getty. Alice, "Ganesa, A Monograph On The Elephant - Faced God". P. 03*
21. *Winternitz, Moriz. "Ganesa In The Mahabharata", Journal Of The Royal Asiatic Society Of Great Britain And Ireland', P. 382*
22. *Hopkins's, E.W. "The Great Epic Of India". P. 115*
23. *विषाणं चास्य निष्कृष्य वालिपुत्रौ महाबलः ।*
   देवान्तकमभिद्रुत्य ताडयामास संयुगे ॥
   रामायण, युद्धकाण्ड, सप्ततितमः सर्गः, श्लोक सं0 १५
24. *अष्टौ श्लोकसहस्राणि अष्टौ श्लोकशतानि च ।*
   अहं वेद्मि शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा ॥
   - महाभारत, आदिपर्व, १. ८१
25. *Sachan, Edwardc. "ALBERUNI'S INDIA", VOL. 1., P. 134*
26. *अब्बासी, नूर नबी. "भारत : अल-बिरूनी", पृ. सं., ५७*